

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
	<p>भाखल दरिया साहेब सत सुकृत बन्दी छोड़ मुक्ति के दाता नाम निशान सही।</p> <p>ग्रन्थ प्रेम मूला</p> <p>(भाखल दरिया साहेब)</p> <p>साखी - १</p> <p>प्रेम कमल जल भीतरे, प्रेम भँवर ले बास।</p> <p>होत प्रात सुपट खुले, भान तेज प्रकाश॥</p> <p>चौपाई</p> <p>भंवर पुहुप में बासा कीन्हा। गंध सुगंध प्रेम रस भीन्हा।१।</p> <p>जो जन प्रेम नाम बसि भैऊ। सत्तगुरु चरण सुधारस पैऊ।२।</p> <p>प्रेम बसी भक्ति अनुरागा। प्रेम प्रीति दिल भव वैरागा।३।</p> <p>जैसे मृगा नाद लव लाई। सुनत श्रवण ध्वनि प्रेम समाई।४।</p> <p>प्रेम बसी होय प्राणहिं दीन्हा। सन्मुखा जीव हाथ कै लीन्हा।५।</p> <p>जब लगि प्रेम दिया नहिं बरई। भवन कूप अंधियारे परई।६।</p> <p>ज्ञान ज्योति जब निर्मल बरई। सकल पाप किल विषि सब हरई।७।</p> <p>बिना प्रेम नर यमपुर जावे। होय प्रेम अमृत फल पावे।८।</p> <p>सतनाम प्रेम निजुलागा। प्रेम प्रीति सोई सन्त सुभागा।९।</p> <p>साखी - २</p> <p>प्रेम प्रीति करु नाम से, भवजल जाहि न हारि।</p> <p>बिना प्रेम नहिं भक्ति है, कमल सुखा बिनु बारि॥</p> <p>चैपाई</p> <p>चन्द जोति कुमुदुनी रहु फूला। प्रेम प्रीति बृगसा निजु मूला।१०।</p> <p>जल में कुमुदिनी चन्द अकाशा। ऐसो प्रेम प्रीति परगाशा।११।</p> <p>चातृक प्रीति स्वाती लागा। जीवन जन्म सो भया सुभागा।१२।</p> <p>औरि सृष्टि सभे जल तीता। प्रेम प्रीति नाम निजु हीता।१३।</p> <p>सलिता सागर या जग अहई। अनल समान सभे वोय कहई।१४।</p> <p>व्रत एक सत्त जिनि जाना। सत्तनाम निजु प्रेम समाना।१५।</p> <p>ज्यों टेक चित चातृक राखा। वरिषु बुन्द अमृत रस चाखा।१६।</p> <p>रहे विश्वास तब वरसे आई। बिना प्रेम नहिं सतगुरु पाई।१७।</p> <p>कूल के ऊंच नीच होई आवे। तबहिं प्रेम मुक्ति फल पावे।१८।</p>					
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ३			
सतनाम			कहे दरिया साचो दिल, दुर्मति सकल बोहाय। प्रेम सुरती बासा करे, तब आवा गमन मेटाय॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			जैसे कनक सोहागा रासा। ऐसो प्रेम पुरुष के पासा।१६।		सतनाम	
			चकोर प्रीति पावक से कीन्हा। चुंगत अग्नि प्रेम रस भीन्हा।२०।			
सतनाम			ऐसो प्रीति है प्रेम पियारा। आशिक प्रेम सदा उंजियारा।२१।		सतनाम	
			नैन सोई जेहि प्रेम समाना। बिना प्रेम है शील पखाना।२२।			
सतनाम			बिना प्रेम भोजन नहिं भावे। प्रेम प्रसाद अमृत फल पावे।२३।		सतनाम	
			बिना प्रेम नैन है खाली। बिना वाटिका जैसे माली।२४।			
सतनाम			बिना प्रेम मानुष है कैसा। मधु काढ़ि छार मुखा जैसा।२५।		सतनाम	
			बिना प्रेम शुद्ध नहिं बानी। वृगसे प्रेम सुबास बखानी।२६।			
सतनाम			कहे दरिया प्रेम मतवाला। खुले पत्र प्रेम का प्याला।२७।		सतनाम	
			साखी - ४			
सतनाम			कमल भंवर बासा करे, बिलगि बिहरि मिलि जाय। ऐसो नाम बिमल रस, रहे चरण लपटाय॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			अम्बुज नैन मँह प्रेम लगावे। वेद चतुरगुन सो नर पावे।२८।		सतनाम	
			अगम अगोचर बुद्धि की बानी। कमल सुमंडित परसे परानी।२९।			
सतनाम			परसे प्रेम सो राग बिरागा। निशदिन संत संगति अनुरागा।३०।		सतनाम	
			बिना प्रेम जनि गावे कोई। भांड़ भांट गणिका मति होई।३१।			
सतनाम			प्रेम चुभे तब होय अनुरागा। ज्यों जल रंग मिलि गयो सुभागा।३२।		सतनाम	
			ऐसो प्रेम शीतल होय जाई। लोक लाज कुल सभे मेटाई।३३।			
सतनाम			प्रेम पंथ महं पैठे सोई। अब किछु बात कहे का होई।३४।		सतनाम	
			प्रेम पंथ पगु दीन्हों जानी। अब तो दुसर होय न आनी।३५।			
सतनाम			लोक लाज सकल कुल गारी। तोरि डारा सभ जग परचारी।३६।		सतनाम	
			साखी - ५			
सतनाम			तोरे नाता जाति का, जन निजुपुर पहुंचे जाय। आपे बूझे प्रेम है, निरखि नाम निजु पाय॥		सतनाम	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	प्रेम पतंग दीपक महं हूला। तन सभ जरि गयो लागु न शूला।३७।	सतनाम	साहस नारि करे पिय लागी। भस्म भया तन देखात आगी।३८।	सतनाम	प्रेम प्रगास अग्नि नहिं जाना। भया प्रेम जनु चढ़ी बेवाना।३९।	सतनाम
सतनाम	सन्मुख शूरा रन महं जूझे। साहस प्रेम बान नहिं सूझे।४०।	सतनाम	बिनु साहस होखे नहिं कामा। साहस प्रेम बसे निजु धामा।४१।	सतनाम	प्रेम दृष्टि चूभे सत सोई। जहां देखे तहां औरी न कोई।४२।	सतनाम
सतनाम	आतम ब्रह्म है मन अनन्ता। एक समाने सकल सुमन्ता।४३।	सतनाम	कथनी कथि-कथि भूले मूढ़ा। परे भवन में अगम अगूढ़ा।४४।	सतनाम	कथि-मथि अपने प्रेम समाना। ज्यों जल पुरइनि रहत अमाना।४५।	सतनाम
सतनाम		साखी - ६		सतनाम		
सतनाम		प्रेम मारग बांको बड़ों, समुझि चढ़े कोई जानि।		सतनाम		
सतनाम		ज्यों खांडो की धारि है, सतगुरु कहा बखानि॥		सतनाम		
सतनाम		चौपाई		सतनाम		
सतनाम	पारस प्रेम धरती मैंह लागा। तबहीं अंकुर बीज निजु जागा।४६।	सतनाम	अधारस ज्ञान प्रेम है मूला। सत सुबास औरी नहिं तूला।४७।	सतनाम	जबहिं धूप तवे जब आई। धूप धरती महं रहा समाई।४८।	सतनाम
सतनाम	तवे धूप जो बास अमाना। धरती प्रेम जो रहा समाना।४९।	सतनाम	जल ले पवन चढ़ा असमाना। वर्षि बूंद धरती पर आना।५०।	सतनाम	हृद पर ठंडा पड़ा जो आई। निकली खुशबोय चहुंदिश धाई।५१।	सतनाम
सतनाम	जन्म अंकुर जिमि बहुत सोहाई। चहुंदिश गुलजार रहा जो छाई।५२।	सतनाम	पृथ्वी के पारस ठंडा अहई। जीव के पारस नाम जो गहई।५३।	सतनाम	जैसे पौन जो जलहिं उड़ावे। ऐसे शब्द जीव मुक्तावे।५४।	सतनाम
सतनाम	जीव जुड़ाय पुहुप की खानी। बैठे बोलहिं अमृत बानी।५५।	सतनाम		सतनाम		
सतनाम		साखी - ७		सतनाम		
सतनाम		धरती तो काया भई, गुरु वर्षहिं अमृत नीर।		सतनाम		
सतनाम		ब्रह्म पीउषन प्रेम रस, मेटा सकल तन पीर॥		सतनाम		
सतनाम		चौपाई		सतनाम		
सतनाम	अब कहों कपूर की खानी। यह भेद बिरला केहु जानी।५६।	सतनाम	वह केदली बिनु लाये लागे। अपनी सुरति से वह जागे।५७।	सतनाम		
सतनाम		3		सतनाम		
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	फल-फूल कबहीं नहिं होई । वह केदली बौधा नहिं सोई । ५८ ।	सतनाम	नौ कोपर सुर बाती जो आना । केदली भाग जो आय तुलाना । ५९ ।	सतनाम	वहि औसर स्वाती झरि लाई । पहिला बूंद पड़ा जौं आई । ६० ।	सतनाम
सतनाम	मास एक मंह गोटा बंधाना । कपूर वास जो आय तुलाना । ६१ ।	सतनाम	पारखी जन निकालि ले आवे । हाट मांह ले सबहीं देखावे । ६२ ।	सतनाम	कोई केदली नहिं करे बखाना । नाम कपूर सभे कोई जाना । ६३ ।	सतनाम
सतनाम	बहुत स्वेत जो सुबुक सोहाई । बहुत जतन करि राखहिं जाई । ६४ ।	सतनाम	साखी - ८	सतनाम	स्वाती तो गुरु भये, केदली काया बन्धान ।	सतनाम
सतनाम	नाम सजीवन प्रेम रस, मिला सो निर्मल ज्ञान ॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	ऐसन पारस सतगुरु दीन्हां । जाति बरण सभे मेटि लीन्हां । ६५ ।	सतनाम
सतनाम	जैसे केदली रहे अछूता । वैसे ब्रह्म जो होय पुनीता । ६६ ।	सतनाम	पंडित वेद सभे कोई जाना । पारस मूल नहिं पहचाना । ६७ ।	सतनाम	पारस प्रेम बुझो चित लाई । जीव कारन सभ किया बिनाई । ६८ ।	सतनाम
सतनाम	जाते जीव नष्ट नहिं जाई । सत्त शब्द खोजो चित लाई । ६९ ।	सतनाम	हम जाना हमें साहेब बताई । ताते भेद कहा समुझाई । ७० ।	सतनाम	मुक्ता मोती कहे कपूरा । झूठ वचन माने सब फूरा । ७१ ।	सतनाम
सतनाम	आदि कहे सो अन्त देखावे । बिनु मुख बैन कहां ते आवे । ७२ ।	सतनाम	प्रथमहिं दूध सभे कोई जाना । दूध में बास जो रहा समाना । ७३ ।	सतनाम	पावक पर अच्छा जो कीन्हा । ठंडा कर जोरन तब दीन्हा । ७४ ।	सतनाम
सतनाम	साखी - ९	सतनाम	जोरन जावन देइके, दही भया जब थीर ।	सतनाम	वास विमल तब पाइये, मथनी मथो शरीर ॥	सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	जावन देत फेरि भै गयो दही । तबहूं घृत बास नाहीं कही । ७५ ।	सतनाम	मथनी मथ लैन जो लीन्हा । लैन लीन्ह बास नहिं दीन्हा । ७६ ।	सतनाम
सतनाम	घृत के पारस पावक अहई । बिनु पारस घृत नाही लहई । ७७ ।	सतनाम	पावक पारस दीन्ह लगाई । खरा हुआ अच्छा होय जाई । ७८ ।	सतनाम	हुआ थीर बास बिलगाना । बास सुबास सभे कोई जाना । ७९ ।	सतनाम
सतनाम	4	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	कहो बास कहां ते आया। यह भेद विरला केहू पाया।८०।	सतनाम	जब लगि प्रेम युक्ति नहिं होई। तब लगि बास पावे नहिं कोई।८१।	सतनाम	है खुश वोई घट में भाई। मथो प्रेम वासना पाई।८२।	सतनाम
सतनाम	जबहीं प्रेम चुभा यह नीका। मेटिगो दुर्मति दोविधा जीका।८३।	सतनाम	साखी - १०	सतनाम	जैसे परिमल पारस, मल के कीन्हों दूर।	सतनाम
सतनाम	ऐसे शब्द संजीवनी, सदा रहे भरिपूरि॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	छीर करु क्षमा दया करु दही। मन मथु मथनी घृत सो अही।८४।	सतनाम
सतनाम	शील सन्तोष खम्भा करु भाई। सुरति निरति का नेता लाई।८५।	सतनाम	तन करु मटुकी प्रेम करु पानी। निकले घृत सुबास बखानी।८६।	सतनाम	कर्म जीव मलीन जो कीन्हा। सत बिना ब्रह्म भौ छीना।८७।	सतनाम
सतनाम	पारस प्रेम से मइल कटाई। सतगुरु सनदि खोजो चित लाई।८८।	सतनाम	गहिर ज्ञान भेद कहि दीन्हा। कम जुबान रहो लव लीन्हा।८९।	सतनाम	नारि भोग से लीन्ह बचाई। प्रान प्रेम में रहा समाई।९०।	सतनाम
सतनाम	ज्यों ज्यों दिल में बासा भैयू। त्यों ब्रह्म साफ होय रहेयू।९१।	सतनाम	भया साफ मोह बिलगाना। तब अजपा के कहब ठेकाना।९२।	सतनाम	साखी - ११	सतनाम
सतनाम	पारस मूल यह शब्द है, सुनहु सन्त सुजान।	सतनाम	कहे दरिया दिल देखिये, गहो प्रेम निर्वान॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	आगे दृष्टि गगन के धावे। खोजो प्रेम युक्ति फल पावे।९३।	सतनाम	देखत झरी तहां बहुत सोहाई। परिमल अग्र वास तहां पाई।९४।	सतनाम	काया अग्र फूले तहां फूला। शब्द सजीवनि है गा मूला।९५।	सतनाम
सतनाम	बिना प्रेम नहिं फूले बारी। सींचत जल फूली फुलवारी।९६।	सतनाम	सींचत द्रुम हरिहर भौ राता। देखत प्रेम सुन्दर भौ पाता।९७।	सतनाम	सुन्दर फूल जो फूली चमेली। गुंथि हार ग्रीव मंह मेली।९८।	सतनाम
सतनाम	तिल पर फूल जो दिया बिछाई। घौंचि वासना तिल समाई।९९।	सतनाम	सब घट नाम सजीवन गावे। बिनु परिचै कोई वास न पावे।१००।	सतनाम	पेरे तिल तेल अलगाना। शब्द चीन्हि ऐसे बिलगाना।१०१।	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - १२			
सतनाम			तिल के तेल फुलेल भौ, मेटा तिल को नांव।		सतनाम	
			सतगुरु शब्द समानेऊ, बसे अमर पुर गांव॥			
			चौपाई			
सतनाम			भृंग पारस कहवां पाई। कैसे कीट से भृंग बनाई।१०२।		सतनाम	
			वाका भेद लखो नहिं कोई। पढ़ि पंडित जो वेद विगोई।१०३।			
सतनाम			जाते सतगुरु कहा बखानी। यह भेद बिरला केहु जानी।१०४।		सतनाम	
			सेवाती जबहीं वर्षि गौ भाई। परा जल धरती पर आई।१०५।			
सतनाम			सेवाती को जल पारस लिन्हा। भृंग प्रेम युक्ति जो किन्हा।१०६।		सतनाम	
			कीट को पांखि तोरि के लिन्हा। घर अंधियारे बैठि का किन्हा।१०७।			
सतनाम			मुख से पारस मुख में दीन्हा। सात रोज में भृंगा कीन्हा।१०८।		सतनाम	
			भया पंख मुख औरी आना। कहो कीट कर कौन बखाना।१०९।			
सतनाम			कीट के गुरु भृंगा किन्हा। मानुष के गुरु सतगुरु चिन्हा।११०।		सतनाम	
			सतगुरु चीन्हि प्रेम लव लावे। कीट से ब्रह्म साफ होई जावे।१११।			
			साखी - १३			
सतनाम			बलिहारी सतगुरु की, जिन्हि कहा मुक्ति का भेद।		सतनाम	
			सत्त शब्द पारस हुआ, कोई ज्ञानी करे निखेद॥			
			चौपाई			
सतनाम			भुवंग मुख मनि कैसे पाई। कौने युक्ति मनि उपजी आई।११२।		सतनाम	
			सहस्र वर्ष भुवंग विषि पासा। मानुष पांव कबे नहिं ग्रासा।११३।			
सतनाम			योग युक्ति सुरज कहं विनवे। त्रिमिरी छुटी जबे भौ दिनवे।११४।		सतनाम	
			विषि से मांति जला जल भैऊ। स्वाती को बूंद आमृत पैऊ।११५।			
सतनाम			मिटिगो विषि मनि उपजी आई। भया सिद्धि तन तप्त बुझाई।११६।		सतनाम	
			स्वाती को जल नहीं पावे। तबहीं उड़ि मलयागिरी जावे।११७।			
सतनाम			ऐसे जोगी युक्ति जो करई। होय ज्ञान मुक्ति फल लहई।११८।		सतनाम	
			वर्ष द्वादश साधे अंगा। काल कुबुधि अपने हो भंगा।११९।			
सतनाम			ज्ञानयुक्ति प्रेम है मुक्ता। पाप पुन्य कबहीं नहीं भुक्ता।१२०।		सतनाम	
			साखी - १४			
सतनाम			कहे दरिया सतगुरु खोजो, शब्दहिं करो विचार।		सतनाम	
			और गुरु सस्ता जक्त में, निर्मल मिला न सार॥			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	स्वाती को जल कहों बखानी। स्वाती से उपजे सभ खानी।१२१।	सतनाम	गज मुक्ता कहु कैसे होई। स्वाती के जाने सब कोई।१२२।	सतनाम	बिन पारस मुक्ता नहिं होई। परे बूंद फेरि ढरि जावे सोई।१२३।	सतनाम
सतनाम	स्वाती के सभ कहे बखानी। चुंगल का कोई मर्म न जानी।१२४।	सतनाम	परा बूंद मस्तक पर आई। बिनु चुंगल कांजी होय जाई।१२५।	सतनाम	चुंगल चोंच मस्तक पर दीन्हा। छुवत जल भीतर के लीन्हा।१२६।	सतनाम
सतनाम	उपजे मुक्ता निर्मल सारा। चुंगल पारस भेद निनारा।१२७।	सतनाम	कुंजल काया कहिये भाई। स्वाती ज्ञान मिला तहां आई।१२८।	सतनाम	सतगुरु प्रेम प्रीति निजु भेदा। तबहीं ज्ञान निज करे निखेदा।१२९।	सतनाम
सतनाम		सतनाम	साखी - १५	सतनाम		सतनाम
			जैसे दूध बिनु जावन, सरि के जाय नसाय।			
			जाय जीव सतगुरु बिना, खोजो शब्द बनाय॥			
सतनाम		सतनाम	चौपाई	सतनाम		सतनाम
सतनाम	मोती पारस कहों बखानी। स्वाती के यह सभ जग जानी।१३०।	सतनाम	सीप आस स्वाती लाई। बिनु पारस मोती नहिं पाई।१३१।	सतनाम	वर्षि बुन्द स्वाती दीन्हा। सुपट खोलि इक्षा भरि लीन्हा।१३२।	सतनाम
सतनाम	पीवे जल फेरि होय निरासा। बिनु पारस मोती नहीं बासा।१३३।	सतनाम	पंडित वेद सभ कहे निरासी। सकुच मीन का मर्म न जानी।१३४।	सतनाम	जिनि सब रचा सकल जग खानी। ताकर मूल सो कहेव बखानी।१३५।	सतनाम
सतनाम	जाके सतगुरु भेद बतावे। पारस मूल शब्द सो पावे।१३६।	सतनाम	सकुच मीन के सीप बखाना। रतनागर ताहि के जाना।१३७।	सतनाम	निर्मल काया वाकी भावे। मानो मोतिन्ह पाषर छावे।१३८।	सतनाम
सतनाम	बड़-बड़ मोती ताके अंगा। मानो जोति रतन को संग।१३९।	सतनाम		सतनाम		सतनाम
			साखी - १७			
सतनाम		सतनाम	सीप तो यह जन भए, स्वाती भैगयो ज्ञान।	सतनाम		सतनाम
			पुरुष तो सतगुरु भये, प्रेम युक्ति दीन्हों दान॥			
सतनाम		सतनाम	चौपाई	सतनाम		सतनाम
सतनाम	नव पंखा चरण है चारी। दुई मुख है सीप संवारी।१४०।	सतनाम	एक मुख पारस मोती बनावे। एक मुख से भोजन वह पावे।१४१।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	7	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम

	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	ऐसो मोती सिरजनि हारा। सतगुरु खोजहु ज्ञान विचारा॥१४२॥ सीप नारि है जानहु ज्ञानी। सकुच मीन यह पुरुष बखानी॥१४३॥ घर-घर गुरु कान जो लागे। निर्मल ज्ञान जाति नहीं जागो॥१४४॥ सतगुरु प्रेम प्रीति लौ लाई। तबहीं मुक्ति नाम निजु पाई॥१४५॥ होहु दास निजु प्रेम अधीना। जाते प्रेम सदा रंग भीना॥१४६॥ सत शब्द खोजो चित लाई। विहित विहित सब कहा बुझाई॥१४७॥ सूक्ष्म भेद है मूल बखाना। सतगुरु प्रेम पियूषन जाना॥१४८॥	साखी - १७ सतगुरु शब्द परतीति करि, रहो प्रेम लवलीन। दरिया दर्पण देखिये, कबहीं न होय मलीन॥ चौपाई बूझहु पंडित अजर है मूला। मूल छोड़ि डारि धरि झूला॥१४९॥ मूल एक वानी बहु फूला। कहिं कहि कविता ताहि न तूला॥१५०॥ असल भेद बूझहु निजु ज्ञाना। सतगुरु शब्द करहु परवाना॥१५१॥ कलाई के काम कला मंह जाई। कहि कहि कविता फेरि पछताई॥१५२॥ सोई असल टकसार कहावे। जो यह सनदि हजूरी पावे॥१५३॥ बीचहिं छापा सनदि बनावे। जम्ह जगाति ताहि संतावे॥१५४॥ मुक्ति पंथ यह करो निमेरा। जौं चाहहु छप लोकहिं डेरा॥१५५॥ कहे दरिया सत शब्द है सारा। मीठा लागे तब करो विचारा॥१५६॥ अजर नाम निजु निर्मल बानी। परखहु हीरा नाम निजु खानी॥१५७॥	साखी - १८ कहां हीरा की उत्पत्ति, कहां हीरा की खानि। केहि पंक्षि से हीरा भयो, सतगुरु कहा बखानि॥ चौपाई हीरा नखा पंक्षी कर नाऊं। अष्ट शिला परवत के ठाऊं॥१५८॥ स्वाती जबे वर्षि गो पानी। पक्षी सो जल पीवे बखानी॥१५९॥ हीरा उपजे मनि उजियारा। बूझो पंडित करो विचारा॥१६०॥ चारि खानी हीर है भाई। ब्राह्मण क्षत्री वैश्य कहाई॥१६१॥ शूद्र समेत चारि है जाती। करनी बिना सो परा कुभांती॥१६२॥ ताको भेद लखो जौं पावे। खोट होय खोट रहि जावे॥१६३॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
झिलमिल जाति जो होय मलीना। कोइला कपट ताहि कहं चीन्हा।१६४।						
अधरस ज्ञान जो कहा बखानी। हीरा ब्रह्म लेहु पहिचानी।१६५।	सतनाम					सतनाम
कोइला कपट जाहि नहिं राता। ताकर हीरा ब्रह्म सो ज्ञाता।१६६।						
साच शब्द जो बसे शरीरा। ताकर ब्रह्म भया निजु हीरा।१६७।						
साखी - १६	सतनाम					सतनाम
हीरा तो हंसा भये, पंक्षी सकल शरीर।						
सतनाम के जानवे, भया हिरम्पर थीर॥						
चौपाई	सतनाम					सतनाम
जाके प्रेम बसे दिन राती। सो जन कबहीं न परे कुभांती।१६८।						
जाके नाम मूल उजियारा। बरे जोति तहां निर्मल सारा।१६९।						
जाके मूल नाम मनि माला। सोई सन्त हैं ज्ञान रिसाला।१७०।	सतनाम					सतनाम
बिना मूल ज्ञान है खाली। सुरति करे अजपा जपे माली।१७१।						
जो यह निरखो निर्मल मोती। निर्मल ज्ञान बरे तहां जोति।१७२।						
जाके ब्रह्म भेद यह भांती। सोई सन्त साधु की जाती।१७३।	सतनाम					सतनाम
कहे दरिया समुझो यह ज्ञाना। सतगुरु से पावे परवाना।१७४।						
मूल गमि ज्ञान जेहि होई। अष्ट दल कमल प्रेम निजु सोई।१७५।						
अमी कूप पत्र भरि पीजे। ब्रह्म सजीवन सो फल लीजे।१७६।	सतनाम					सतनाम
अमृत चाखहिं हंस भौ सारा। त्यों त्यों दृष्टि भई उजियारा।१७७।						
साखी - २०	सतनाम					सतनाम
सत शब्द जाके बसे, अमर लोक के जाय।						
अमृत फल जहां प्रेम रस, युग-युग क्षुधा बुताय॥						
चौपाई	सतनाम					सतनाम
अब कहों चुम्बक कर भाऊ। चुम्बक देखात गांसी आऊ।१७८।						
तन में गांसी लागी कारी। निकलत पीरा दुख हो भारी।१७९।						
तब करब चुम्बक कर खोजा। जासे दर्द मेटे सब सोजा।१८०।						
चुम्बक देखात गांसी आवे। बिनु चुम्बक गांसी नहिं पावे।१८१।	सतनाम					सतनाम
चुम्बक सत शब्द है भाई। चुम्बक शब्द लोक ले जाई।१८२।						
मृत्यु अन्ध जबहीं नियरायो। चुम्बक शब्द जीव मुक्तायो।१८३।						
लेई निकालि होखो नहिं पीरा। सत शब्द जौं बसे शरीरा।१८४।	सतनाम					सतनाम
नाम प्रेम प्रीति निजु लागे। पारस प्रेम ज्ञान तहं जागे।१८५।						
9	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	अक्षर निःअक्षर शब्द संयोगा। मेटे कष्ट कल्पना रोगा।१८६।	सतनाम	गुरु जौहरी भेद बतावे। शीतल शब्द प्रेम सो पावे।१८७।	सतनाम	साखी - २१	सतनाम
सतनाम	चकमक चित जब चुभे, बरे सो निर्मल ज्ञान।	सतनाम	दृष्टि दिया तहां पेखिये, जगमग ज्योति अमान॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	क्षमा सांगी जेहि बसे शरीरा। शीतल शब्द भया निजु हीरा।१८८।	सतनाम	क्रोध बान ले जबहीं धावे। क्षमा सांगी तब दृढ़ के लावे।१८९।	सतनाम	क्षमा सांगी जब सन्मुख दीन्हा। क्रोध हंकार भये सब छीना।१९०।	सतनाम
सतनाम	काम फौज ले धावे भाई। ज्ञान सांगी से मरि विचलाई।१९१।	सतनाम	बिचले काम चले तब हारी। दीन्हों पगु टरत ना टारी।१९२।	सतनाम	मोह राजा के मधुरी बानी। रोय रोय कहे मोह की रानी।१९३।	सतनाम
सतनाम	आठो अंग ढील के लीन्हा। नैन रोदन बहुते जो कीन्हा।१९४।	सतनाम	वासे ज्ञान कहब समुझाई। को हमको तुम कहवां आई।१९५।	सतनाम	काकर नाती पूत परिवारा। झूठी बनीज करे संसारा।१९६।	सतनाम
सतनाम	तब मोहनी मुख अंचल दीन्हा। सकुचे बैन बोले तब लीन्हा।१९७।	सतनाम	साखी - २२	सतनाम	मोह की रानी भागिया, गई मंदिल के झारि।	सतनाम
सतनाम	मोह राजा से भाखेव, सन्त न आवहिं हारि॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	नारी पुरुष के स्वारथ भोगा। स्वारथ कारन करे संयोगा।१९८।	सतनाम
सतनाम	लालच लोभ सभे डहकावे। फौज बांधि के सत्त डगावे।१९९।	सतनाम	लालच वान बड़ा है भाई। सोना रूपा सभे देखाई।२००।	सतनाम	रहे विरक्त लोभ नहिं जाना। ज्यों आवे त्यों खरचु सुजाना।२०१।	सतनाम
सतनाम	खर्चे खाय तबे सकुचानी। चरनन लागि सन्तन के मानी।२०२।	सतनाम	एक होय फेरि दुई के धावे। तीन होय नहिं खर्चे खावे।२०३।	सतनाम	चौथा जब यह मिले आई। पंचवें गांठी मोसकस लाई।२०४।	सतनाम
सतनाम	तीनि पांच पन्द्रह जब भयऊ। बीस के तब सिजदा दियऊ।२०५।	सतनाम	बीस से जब भै गौ तीसा। साठि मोहिं देहु जगदीशा।२०६।	सतनाम	साठि से जब सौ होय जाई। ठोके कपार बखत बड़ भाई।२०७।	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सेसे	बढ़त	लागु	नहिं	बारा।	कई	वर्ष में भयो हजारा।२०८।
सहस्र	से	भयो	लाख	सौ	बारा।	लागे करन बहुत अतिचारा।२०९।
साखी	-	२३				
मांते	मया	मद	गर्वते,	सूझि	परे	नहिं जाल।२१०।
जीव	अनेक	धरि	मारहीं,	नरक	परे	मतवाल।२११।
टेढ़ी	चाल	टेढ़ी	जो	कहई।	हमसे	कवन बरोबर करई।२१२।
पूजहिं	भूत	देवी	और	देवा।	लेइ	चढ़ावें घृत और मेवा।२१३।
कारी	पाठि	खोजि	ले	आवहीं।	बहुत	संजम से जाय चढ़ावहीं।२१४।
ऐंठे	फिरे	भया	अभिमानी।	टेढ़ी	बात	कहे जो जानी।२१५।
मांते	गर्व	जो	भया	हंकारा।	धर्म	राय का पड़ा पुकारा।२१६।
गर्व	हंकार	जहां	यह	जागा।	तहवां	वान हमारा लागा।२१७।
अग्नि	डाह	चोर	धन	लीन्हा।	सो	जढ़ जन्म अकारथ दीन्हा।२१८।
राजा	डंडे	चोर	ले	जाई।	छोरि	लीन्ह क्षार मुखा लाई।२१९।
राजा	के	धन	रहा	न हाथा।	ठोंकत	माथ चले यम साथ।२२०।
जिन्हि	खर्चा	तिन्हि	जीति	के	लीन्हा।	जीवन जन्म सुफल कै दीन्हा।२२१।
बिनु	जांचे	बिनु	मांगे	दीन्हा।	जालिम	बाजी जीति के लीन्हा।२२२।
साखी	-	२४				
करहू	प्रेम	सन्तन्हिं	से,	सेवहु	सतगुरु	पाँव।
मानुष	जन्म	दुर्लभ	है,	फेरि	नहिं	ऐसो दाव।।
चौपाई						
धन्य	सोई	भक्ति	अनुरागा।	धन्य	सोई	जेहि आतम जागा।२२३।
धन्य	सोई	जिन्ह	सेवा	कीन्हा।	धन्य	सोई जिन्ह सतगुरु चीन्हा।२२४।
धन्य	सोई	सत	शब्द	समाई।	प्रेम	प्रीति बिलगे नहिं भाई।२२५।
धन्य	सोई	जिन्ह	खसमहिं	जाना।	धन्य	सोई सतव्रत जिन्ह ठाना।२२६।
धन्य	सोई	प्रेम	पगु	ठाढ़ा।	धन्य	सोई असल रंग गाढ़ा।२२७।
धन्य	सोई	जग	धक्का	सहई।	भक्ति	कारन सभ गुन लहई।२२८।
धन्य	सोई	सन्त	निन्दा	न कीन्हा।	धन्य	सोई जिन्हि आतम चीन्हा।२२९।
प्रेम	मुक्ति	निजु	खोजहु	भाई।	जाते	जीवन सुफल होय जाई।२३०।
सतगुरु	बिना	न	होखे	कामा।	सतगुरु	प्रेम बसे निजु धामा।२३१।
11						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

साखी - २५

प्रेम भक्ति जाके बसे, निशदिन रहे अधीन।
दरिया दिल कह देखिये, रहो चरण लौलीन॥

चौपाई

रांड करे मरद के साजा। निशदिन ऐगुन होत अकाजा।२३२।
विपरीत देखो ऐगुन होई। वाके संग बसे जनि कोई।२३३।
बैठु सभा में सो कुल हीनी। वेश्या की गति ताकहं चीन्ही।२३४।
ऐसन करे कुटिलता भाऊ। अनेक मर्द छुवन तेहि धाऊ।२३५।
उलटी चाल चले मसवासी। अगिली पछिली दूनो नासी।२३६।
कहे दरिया अंत की छोटी। ऐसा कर्म करे सो छोटी।२३७।
भक्ति करे गृही मंह रहई। अपना स्वामी से सुखा लहई।२३८।
पतिव्रत करे दूजा नहिं जाना। सतगुरु प्रेम नित करे बखाना।२३९।
सो तिरिया सुख युग-युग पावे। सतगुरु पद पंकज हिय लावे।२४०।

साखी - २६

तिरिया भवन बीच भक्ति में, रहे पिया के पास॥
मन उदास नहिं चाहिये, चरण कमल की आस॥

ग्रन्थ प्रेममूला पूर्ण